लेखा प्रणाली का कार्यान्वयन

IMPLEMENTATION OF DEAS IN UTTAR PRADESH

DIRECTRATE OF LOCAL BODIES/ SLNA
U.P. LUCKNOW

लेखा प्रणाली

किसी भी संस्था द्वारा अपने आर्थिक गतिविधियों को लिखने के लिए निम्न दों प्रणालियां प्रयोग में लायो जाती है–

1. इकहरी (Single) लेखा प्रणाली
2. दोहरी (Double) लेखा प्रणाली

इकहरी (Single) लेखा प्रणाली

रोकड+ (Cash) आधारित

- इस प्रणाली के अंतर्गत किसी भी रोकड़ लेनदेन के केवल एक पक्ष का हिसाब लिखा जाता है।
- रोकड़ से भिन्न गतिविधियों का लेखा नहीं किया जाता है।
- वर्तमान समय में नगरीय निकाये अपने खातों को लिखने के लिए इसी प्रणाली का प्रयोग कर रहे हैं।

दोहरी लेखा प्रणाली

उपार्जित (Accrual) आधार पर

- दोहरी लेखा प्रणाली में किसी भी लेनदेन के दोनों पक्षो को लिखा जाता है।
- इस प्रणाली में रोकड़ लेन देन के अतिरिक्त उपार्जन के आधार पर सभी आर्थिक गतिविधियों का लेखा किया जाता हैं ।

दोहरी लेखा प्रणाली की आवश्यकता

- क- किसी क्षेत्र विशेष के नागरिकों से सम्पत्ति कर के रूप में कितनी धनराशि प्राप्त होनी है?
- ख- स्थानीय निकाय के नियत्रंणाधीन भूमि, भवनों, सड़कों, पुलों इत्यादि परिसम्पत्तियों का कुल मूल्य कितना है ?
- ग- नगर के क्षेत्र विशेष में आपूर्तित जल की कुल लागत कितनी है?
- घ- नगर में जलापूर्ति, विद्युत व्यवस्था, शिक्षा, स्वास्थ्य, सफाई इत्यादि सेवाओं पर लागत के सापेक्ष कितनी सब्सिडी देनी पड़ रही है?

दोहरी लेखा प्रणाली की आवश्यकता

- ड़- स्थानीय निकाय की गत वर्षों की समेकित देयतायें (liability) कितनी हैं? आगामी वर्षों में पेन्शन, देय ब्याज, परिसम्पत्तियों बदलाव (replacement) इत्यादि के कारण देयताओं की धनराशि कितनी होगी?
- च- गत वर्षों में जुड़ गयी फीस, करों का बकाया इत्यादि की धनराशि जो चालू वर्ष में वसूली जानी है, कितनी है?

एक्रूअल आधारित दोहरी लेखा प्रणाली लागू किया जाना एकमात्र ऐसा उपाय है जिससे उक्त अद्यतन सूचनायें आवश्यकतानुसार सहज में ही उपलब्ध हो सकती हैं।

दोहरी लेखा प्रणाली इकहरी लेखा प्रणाली से क्यों श्रेष्ठ है?

१. वैज्ञानिक विधि

२. सौदे के दोनो पक्षों की प्रविष्टि (Entry)

३. सभी आर्थिक गतिविधियों का लेखा

४. गणितीय शुद्धता की जांच संभव

५. लाभ हानि व आर्थिक स्थिति का पता लगाया जाना संभव

६. तुलनात्मक अध्ययन की सुविधा

७. छलकपट (Fraud) व गबन की कम संभावना

दोहरी (Double) लेखा प्रणाली से लाभ

- भारत सरकार द्वारा नगर निकायों में दोहरी लेखा प्रणाली की अनिवार्यता
- भारत सरकार द्वारा दोहरी लेखा प्रणाली अपनाने वाली नगर निकायों को क्रम साख श्रेष्ठता (Credit Rating) का आवंटन
- बजट बनाने की प्रक्रिया का सुदृढ होना
- वर्ष के बीच में कभी भी आर्थिक स्थिति का ज्ञान संभव
- अनावश्यक व्ययों पर नियंत्रण संभव
- समय व श्रम की बचत

- नगर निकाय की चल व अचल संपत्तियों का ज्ञान एवं उनके मूल्यों एवं लागतों का पता चलना
- पाने योग्य (Receivable) आय का पता चलना
- नगर निकाय की देयताओं जैसे- ठेकेदारों का भुगतान,कार्मिकों के वेतन एवं पेंशन इत्यादि का ज्ञान होना संभव
- वास्तविक व्यय का पता चलना
- वास्तविक आधिक्य अथवा कमी का ज्ञान होना
- सूचनाओं का संयोजित संकलन सम्भव

नगद आधारित एवं एक्रूअल आधारित लेखांकन में अन्तर

पक्ष	नगद आधारित लेखा	एक्रूअल आधारित लेखा
आय	लेखांकन , नगदी के प्राप्ति पर की जाती है। उदाहरण स्वरूप :	लेखांकन , आय के अर्जित होने पर, चाहे उसकी नगद वसूली/ प्राप्ति हुई हो अथवा नहीं, की जाती है। उदाहरण स्वरूप :
	➢सम्पत्ति कर की वसूली होने पर।	➢सम्पत्ति कर की धनराशि प्राप्य (receivable) हो जाने पर, मॉग पत्र (demand note) जारी हो जाने पर।
	➢शुल्क और दण्ड की धनराशि वसूल होने पर।	
	➢अनुदान की धनराशि के बैंक खाते में स्थानान्तरित होने पर।	➢अनुदान की स्वीकृति विषयक आदेश प्राप्त हो जाने पर।
		➢भवन कर, बिक्रय किये गये सम्पत्ति का मूल्य या किश्तें इत्यादि, प्राप्य (receivable) हो जाने पर।

नगद आधारित एवं एक्रूअल आधारित लेखांकन में अन्तर

पक्ष	नगद आधारित लेखा	एक्रूअल आधारित लेखा
व्यय	लेखांकन, नगद भुगतान (cash payment) (जिसमें चेक द्वारा या बैंक स्थानान्तरण द्वारा भुगतान सम्मिलित है) पर की जाती है। उदाहरण स्वरूप :	लेखांकन , व्यय होने (incurred) या देयता सृजित (liability arise) होते ही किया जाता है। उदाहरण स्वरूप :
	➢जब वेतन का भुगतान किया जाता है।	➢माह के समाप्त होते ही उस माह का वेतन कर्मचारियों को देय (payable) हो जाता है।
	➢जब आपूर्तिकर्ताओं के बिलों का भुगतान किया जाता है।	➢सामग्री आपूर्ति हो जाने के उपरान्त आपूर्तिकर्ता को भुगतान देय हो जाता है।

उदाहरण

ख नगर निगम ने यूजर चार्ज का माह अगस्त के लिए रु 1000.00 तथा माह सितम्बर के लिए रु 500.00 की माँग पत्र जारी किया। माह अगस्त के सापेक्ष दिनांक 14.08.2010 को रु 600.00 तथा दिनांक 10.09.2010 को रु 400.00 प्राप्त हुए। माह सितम्बर के लिए रु 500.00 दिनांक 15.09.2010 को प्राप्त हुए। माह अगस्त में कुल व्यय रु 550.00 तथा सितम्बर में रु 350.00 का भुगतान किया। अन्य कोई व्यय/आय दोनों माह में नहीं हुई है। इसको दोनों लेखांकन विधियों से निम्न प्रकार समझा जा सकता है।

लेखांकन आधार	**नगद आधार**		**उपार्जित आधार**	
माह	***अगस्त***	***सितम्बर***	***अगस्त***	***सितम्बर***
आय	रु 600.00	रु 900.00	रु 1,000.00	रु 500.00
व्यय	रु 550.00	रु 350.00	रु 550.00	रु 350.00
शुद्ध आय	रु 50.00	रु 550.00	रु 450.00	रु150.00

उपरोक्त से स्पष्ट है कि नगद आधार पर माह अगस्त में रु 50.00 की आय तथा माह सितम्बर में रु 550.00 की आय दिखाया गया है। लेकिन उपार्जित आधार पर माह अगस्त की शुद्ध आय रु 450.00 तथा माह सितम्बर की रु 150.00 है।

उपरोक्त उदाहरण से स्पष्ट हो रहा है कि उपार्जित आधार पर जब लेखांकन किया जाता है तो एक समयावधि से सम्बंधित सभी आय/व्यय उसी समयावधि में रिकार्ड कर लिए जाते हैं, भले ही उनकी प्राप्ति/खर्चे कभी भी हों अर्थात एक समयावधि की वास्तविक लाभ/हानि निर्धारण उपार्जित आधार पर Accounting से ही सम्भव है।

बैलेन्स सीट ख नगर निगम 31.03.2011

निधि के स्त्रोत	धनराशि रु0 लाख में	निधि के उपयोग	धनराशि रु0 लाख में
पुॅजी खाता	100	स्थाई सम्पत्तियां	
सामान्य संचय	20	सकल लागत घटाय – ह्रास	100
ऋण		**निवेश**	
शासन से।	10	बैंक की सावधिजमाएं	20
बैंक से।	0	अन्य निवेश	10
चालु दायित्व एवं प्रावधान		**चालु सम्पत्तियां ऋण एवं अग्रीम**	
जमा प्रतिभूतियां	10	ऋण (कर्मचारियों को)	10
डिपाजिट काय	10	अग्रिम (आपूर्ति कर्ता व ठेकेदारों को)	10
अनुदान व अंशदान	10	विविध देनदार (सम्पत्ति, जलकर इत्यादि)	10
टी.डी.एस. पेयबल	10	बैंक अवशेष	10
विविध लेनदार (वेतन, पेंशन, मजदूरी, यात्रा व्यय इत्यादि।)	10	नकद अवशेष	2
आय व्यय खाता	3	अन्य चालु सम्पत्तियां (डिपाजिट काय, स्टाक, स्टोर्स)	11
योगः–	**183**	**योगः–**	**183**

लाभ हानि खाता ख नगर निगम 31.03.2011

व्यय पक्ष	धनराशि रु0 लाख में	आय पक्ष	धनराशि रु0 लाख में
अधिष्ठान व्यय	15	अनुदान आय	20
प्रशासनिक व्यय	10	कर आय	5
विज्ञापन व प्रसार	5	शुल्क व यूजर चार्ज	7
संचार व्यय	1	निवेश से आय	5
लीगल व्यय	2	सम्पत्ति कर	14
कार्यालय व्यय	2	अन्य आय	4
मरम्मत व्यय	2		
यात्रा व्यय	5		
ह्रास	5		
अन्य व्यय	5		
लाभ हानि खाता (लाभ)	3		
योगः–	**55**	**योगः–**	**55**

धन्यवाद !